

MASTER OF ARTS (HISTORY) (MAH)

Term-End Examination December, 2024

MHI-10: URBANISATION IN INDIA

PREVIOUS YEAR REPEATED QUESTIONS WITH ANSWERS

Write a short note about Kanchipuram as a temple town.

कांचीपुरम का मंदिर नगर पर एक टिप्पणी लिखिए.

Kanchipuram, often referred to as the "City of Temples," is one of the seven Moksha-puris (sacred cities) in Hinduism. It is located in the state of Tamil Nadu, India, and is known for its rich history and spiritual significance. The town is home to numerous ancient temples, many of which are dedicated to Lord Shiva, Vishnu, and other Hindu deities. These temples are known for their stunning Dravidian architecture, intricate carvings, and religious importance.

कांचीपुरम, जिसे अक्सर "मंदिरों का नगर" कहा जाता है, हिंदू धर्म में सात मोक्ष-पुरियों (पवित्र शहरों) में से एक है। यह तमिलनाडु राज्य में स्थित है और अपनी समृद्ध इतिहास और आध्यात्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। यह नगर कई प्राचीन मंदिरों का घर है, जिनमें से अधिकांश भगवान शिव, विष्णु और अन्य हिंदू देवताओं को समर्पित हैं। इन मंदिरों को उनकी शानदार द्रविड़ वास्तुकला, जटिल नक्काशी और धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है।

Among the most famous temples in Kanchipuram are the Kailasanathar Temple, Varadaraja Perumal Temple, and Ekambareswarar Temple. These temples not only attract pilgrims from across India but also hold a special place in the history of Indian architecture and culture. The town is also renowned for its traditional silk weaving industry, making Kanchipuram a blend of spirituality and craftsmanship.

कांचीपुरम के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में, वरदराज पेरुमल मंदिर और एकाम्बेश्वरार मंदिर शामिल हैं। ये मंदिर न केवल भारत भर से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करते हैं, बल्कि भारतीय वास्तुकला और संस्कृति के इतिहास में भी एक विशेष स्थान रखते हैं। यह नगर अपनी पारंपरिक रेशमी बुनाई उद्योग के लिए भी प्रसिद्ध है, जिससे कांचीपुरम आध्यात्मिकता और कारीगरी का मिश्रण बन जाता है।

Trace the emergence and development of Cochin as a port city and a political capital.

एक राजनीतिक राजधानी तथा बंदरगाह नगर के रूप में कोचीन के उदय तथा विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

Cochin (modern-day Kochi), located on the southwestern coast of India in the state of Kerala, has a long history as an important port city and political capital. Its rise as a significant port city and political center can be traced back to ancient times, with its importance growing steadily over the centuries due to its strategic location.

कोचीन (वर्तमान में कोच्चि), जो भारत के दक्षिण-पश्चिमी तट पर केरल राज्य में स्थित है, एक महत्वपूर्ण बंदरगाह नगर और राजनीतिक राजधानी के रूप में एक लंबी इतिहास की धरोहर है। यह नगर प्राचीन काल से एक महत्वपूर्ण बंदरगाह नगर और राजनीतिक केंद्र के रूप में उभरा, और इसके स्थानिक महत्व के कारण इसके महत्व में सदियों तक वृद्धि होती रही।

1. Early History and Strategic Location

Cochin's emergence as a port city can be traced back to ancient times. Its natural harbor and proximity to international trade routes made it an ideal location for maritime trade. The town's location on the Arabian Sea coast allowed it to develop a thriving trade network, particularly with countries in the Middle East, Europe, and Southeast Asia.

प्रारंभिक इतिहास और रणनीतिक स्थान: कोचीन का उदय एक बंदरगाह नगर के रूप में प्राचीन काल से हुआ। इसका प्राकृतिक बंदरगाह और अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्गों के पास होना इसे समुद्री व्यापार के लिए आदर्श स्थान बनाता था। अरब सागर के तट पर स्थित होने के कारण यह नगर मध्य पूर्व, यूरोप और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ एक समृद्ध व्यापार नेटवर्क विकसित करने में सक्षम हुआ।

2. Development Under the Kingdom of Cochin

In the 14th and 15th centuries, Cochin rose to prominence under the Kingdom of Cochin, which had strong political and economic influence. The kingdom's rulers understood the importance of the port for trade and established it as a key center for commerce, particularly in spices like pepper and cardamom, which were highly sought after by European traders.

कोचीन राज्य के अधीन विकास: 14वीं और 15वीं शताब्दी में, कोचीन को कोचीन राज्य के अधीन प्रमुखता मिली, जिसका राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव था। राज्य के शासकों ने व्यापार के लिए बंदरगाह के महत्व को समझा और इसे वाणिज्य के एक प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित किया, विशेष रूप से मसालों जैसे काली मिर्च और इलायची का व्यापार, जो यूरोपीय व्यापारियों द्वारा अत्यधिक मांग में थे।

3. European Influence and Colonial Rule

The arrival of the Portuguese in the late 15th century marked a significant turning point in Cochin's history. In 1503, the Portuguese established a trading post in Cochin and soon gained control over the port. This period saw the development of Cochin as a key center in the global spice trade, attracting the attention of European powers like the Dutch and the British.

यूरोपीय प्रभाव और उपनिवेशी शासन: 15वीं शताब्दी के अंत में पुर्तगालियों का आगमन कोचीन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। 1503 में, पुर्तगालियों ने कोचीन में एक व्यापार केंद्र स्थापित किया और शीघ्र ही बंदरगाह पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया। इस अवधि में कोचीन ने वैश्विक मसाला व्यापार के एक प्रमुख केंद्र के रूप में विकास किया, जिससे डच और ब्रिटिश जैसे यूरोपीय शक्तियों का ध्यान आकर्षित हुआ।

4. Cochin under the Dutch and the British

After the Portuguese, the Dutch took control of Cochin in 1663 and built fortifications, further enhancing its position as a trading hub. The Dutch held control of Cochin for almost a century, after which the British took over the region in the 18th century. Under British rule, Cochin continued to grow as a port city, though its role as a political capital shifted.

डच और ब्रिटिश शासन के तहत कोचीन: पुर्तगालियों के बाद, डचों ने 1663 में कोचीन पर नियंत्रण कर लिया और किलों का निर्माण किया, जिससे इसके व्यापार केंद्र के रूप में स्थिति और मजबूत हुई। डचों ने लगभग एक सदी तक कोचीन पर नियंत्रण रखा, उसके बाद 18वीं शताब्दी में ब्रिटिशों ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। ब्रिटिश शासन के तहत, कोचीन एक बंदरगाह नगर के रूप में विकसित होता रहा, हालांकि इसका राजनीतिक राजधानी के रूप में स्थान बदल गया।

5. Cochin as a Political Capital

In the 19th century, the Kingdom of Cochin became part of the British Raj. During this time, the political capital of the region was moved to Trivandrum (now Thiruvananthapuram). While Cochin lost its political capital status, it remained a vital port city and an economic hub, contributing to the overall development of Kerala.

कोचीन के रूप में राजनीतिक राजधानी: 19वीं शताब्दी में, कोचीन राज्य ब्रिटिश राज का हिस्सा बन गया। इस समय के दौरान, क्षेत्र की राजनीतिक राजधानी त्रिवेंद्रम (वर्तमान में तिरुवनंतपुरम) को स्थानांतरित कर दी गई। हालांकि कोचीन ने अपनी राजनीतिक राजधानी का दर्जा खो दिया, लेकिन यह एक महत्वपूर्ण बंदरगाह नगर और आर्थिक केंद्र बना रहा, जो केरल के समग्र विकास में योगदान करता रहा।

Examine in the growth of the city of Surat and the 17th and 18 centuries . What was the pattern of urban social order of Surat.

17 वीं और 18 वीं शताब्दी में सूरत नगर के विकास का परीक्षण कीजिए।

सूरत की नगरीय सामाजिक श्रेणियों का पैटर्न क्या था।

Surat, located on the western coast of India in the state of Gujarat, was one of the most important port cities in the 17th and 18th centuries. The city's growth during this period was marked by its strategic location along the Arabian Sea, which made it a key center for trade, especially in spices, textiles, and other commodities. Surat was a thriving commercial hub for both domestic and international trade, and it became an integral part of global trade networks during the Mughal Empire.

सूरत, जो पश्चिमी भारत में गुजरात राज्य में स्थित है, 17वीं और 18वीं शताब्दी में भारत के सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाह शहरों में से एक था। इस अवधि में शहर का विकास इसके अरब सागर के किनारे स्थित रणनीतिक स्थान द्वारा प्रेरित था, जिसने इसे व्यापार का एक प्रमुख केंद्र बना दिया, विशेष रूप से मसाले, वस्त्र और अन्य सामानों का व्यापार। सूरत घरेलू और अंतरराष्ट्रीय व्यापार का एक समृद्ध वाणिज्यिक हब बन गया और यह मुगल साम्राज्य के दौरान वैश्विक व्यापार नेटवर्क का एक अभिन्न हिस्सा बन गया।

1. Economic and Commercial Growth

In the 17th century, Surat became the center of maritime trade between India and Europe, especially with the Portuguese, Dutch, English, and French trading companies. The city flourished under Mughal rule, with its port handling a variety of goods, including textiles, which were highly sought after in Europe. Surat also had a thriving diamond trade and played a crucial role in the exchange of luxury goods.

आर्थिक और वाणिज्यिक विकास: 17वीं शताब्दी में, सूरत भारत और यूरोप के बीच समुद्री व्यापार का केंद्र बन गया, विशेष रूप से पुर्तगाली, डच, अंग्रेजी और फ्रांसीसी व्यापारिक कंपनियों के साथ। मुगल शासन के तहत शहर ने समृद्धि प्राप्त की, और इसके बंदरगाह पर वस्त्र जैसे सामानों का व्यापार होता था, जो यूरोप में बहुत मांग में थे। सूरत में हीरे का व्यापार भी समृद्ध था और यह विलासिता वस्तुओं के आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

2. Urban Infrastructure and Cosmopolitan Nature

Surat's growth as a port city led to the development of a vibrant urban infrastructure. The city had busy streets, markets, caravanserais, and a large number of public buildings. It was known for its cosmopolitan nature, as it attracted people from different parts of India and abroad. Traders, artisans, and workers from Persia, Central Asia, Africa, and Europe settled in Surat, contributing to the city's cultural diversity.

शहरी ढांचा और अंतर्राष्ट्रीय स्वभाव: सूरत का एक बंदरगाह नगर के रूप में विकास इसके जीवंत शहरी ढांचे के निर्माण की ओर ले गया। शहर में व्यस्त सड़कें, बाजार, सराय और कई सार्वजनिक भवन थे। यह शहर अपनी अंतर्राष्ट्रीय स्वभाव के लिए प्रसिद्ध था, क्योंकि यह भारत और विदेशों के विभिन्न हिस्सों से लोगों को आकर्षित करता था। व्यापारियों, कारीगरों और श्रमिकों ने जो ईरान, मध्य एशिया, अफ्रीका और यूरोप से सूरत में बसे थे, शहर की सांस्कृतिक विविधता में योगदान दिया।

3. Decline in the 18th Century

The 18th century saw the decline of Surat as a major port city, particularly due to the rise of Bombay (now Mumbai) as a more favorable port for European trade. Several factors contributed to this decline, including changing political dynamics, such as the weakening of Mughal control over the region, and the rise of Maratha power in the area. Additionally, the shifting of European trading interests to Bombay and the development of new trade routes played a role in Surat's decline.

18वीं शताब्दी में गिरावट: 18वीं शताब्दी में सूरत का एक प्रमुख बंदरगाह नगर के रूप में पतन हुआ, खासकर बंबई (वर्तमान मुंबई) के यूरोपीय व्यापार के लिए एक अधिक अनुकूल बंदरगाह के रूप में उभरने के कारण। इस गिरावट में कई कारण शामिल थे, जैसे क्षेत्र में मुगल नियंत्रण का कमजोर होना

और मराठा शक्ति का उदय। इसके अलावा, यूरोपीय व्यापारिक रुचियों का बंबई की ओर रुझान और नए व्यापार मार्गों का विकास भी सूरत के पतन में भूमिका निभाई।

Urban Social Order of Surat

Surat, like many other cities in India during this period, had a well-defined urban social structure, which was based on both caste and professional divisions. The social hierarchy was influenced by a combination of traditional Indian social norms, as well as the influx of foreign traders and settlers.

सूरत की नगरीय सामाजिक श्रेणियाँ: सूरत, जैसे अन्य भारतीय शहरों में, इस अवधि के दौरान एक स्पष्ट शहरी सामाजिक संरचना थी, जो जाति और पेशेवर वर्गों पर आधारित थी। सामाजिक पदानुक्रम परंपरागत भारतीय सामाजिक मानकों के साथ-साथ विदेशी व्यापारियों और बसने वालों के आगमन से प्रभावित था।

1. Caste-Based Hierarchy

The social hierarchy in Surat was largely shaped by the caste system, which divided the population into different categories, each with specific duties and social roles. The higher castes, including Brahmins, Kshatriyas, and Vaishyas, occupied positions of power and wealth, while the lower castes, such as the Dalits, worked in menial jobs and were subject to social discrimination.

जाति-आधारित पदानुक्रम: सूरत में सामाजिक पदानुक्रम मुख्य रूप से जाति व्यवस्था द्वारा आकारित था, जो जनसंख्या को विभिन्न श्रेणियों में बांटता था, जिनमें से प्रत्येक के पास विशिष्ट कर्तव्य और सामाजिक भूमिकाएँ थीं। उच्च जातियाँ, जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, शक्ति और संपत्ति की स्थिति में थीं, जबकि निम्न जातियाँ, जैसे दलित, श्रमिकों के रूप में काम करती थीं और सामाजिक भेदभाव का शिकार होती थीं।

2. Occupational Groups

In addition to caste, Surat's social order was also influenced by occupational divisions. Merchants, traders, and artisans formed the backbone of Surat's economy. The city was known for its textile industry, and many artisans, such as weavers and dyers, belonged to particular castes or guilds. These occupational groups were critical in maintaining the city's economic vitality.

पेशेवर वर्ग: जाति के अलावा, सूरत का सामाजिक संरचना पेशेवर वर्गों से भी प्रभावित थी। व्यापारी, वाणिज्यिक और कारीगर सूरत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ थे। शहर को इसके वस्त्र उद्योग के लिए जाना जाता था, और कई कारीगर, जैसे बुनकर और रंगरेज, विशिष्ट जातियों या व्यापार मंडलों से संबंधित थे। ये पेशेवर समूह शहर की आर्थिक जीवंतता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण थे।

3. Role of Foreign Communities

Surat's cosmopolitan nature also influenced its social structure. Several foreign communities, including the Persian, Arabic, Jewish, and Armenian merchants, established themselves in Surat. These foreign settlers formed their own communities within the city, with their own

religious and cultural practices. However, they were also integrated into the social and economic life of Surat through trade and intermarriage with local residents.

विदेशी समुदायों की भूमिका: सूरत का अंतर्राष्ट्रीय स्वभाव इसके सामाजिक संरचना को भी प्रभावित करता था। कई विदेशी समुदायों, जैसे ईरानी, अरबी, यहूदी और आर्मेनियाई व्यापारी, सूरत में बसे। ये विदेशी बसने वाले शहर के भीतर अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाओं के साथ अपने समुदायों का निर्माण करते थे। हालांकि, वे व्यापार और स्थानीय निवासियों से अंतर-विवाह के माध्यम से सूरत के सामाजिक और आर्थिक जीवन में भी एकीकृत हो गए थे।

Analyse the emergence of Temple towns on their Tamilakam region.

तमिलकम क्षेत्र में मंदिर नगरों के उदय का विश्लेषण कीजिए.

The Tamilakam region, which corresponds to modern-day Tamil Nadu, Kerala, and parts of Andhra Pradesh and Karnataka, witnessed the emergence of temple towns as significant religious, cultural, and economic centers. The development of these temple towns is deeply connected to the evolution of the Tamil culture, religious practices, and the patronage provided by dynasties such as the Cholas, Pandyas, and Pallavas.

तमिलकम क्षेत्र, जो वर्तमान में तमिलनाडु, केरल और आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटका के कुछ हिस्सों से मेल खाता है, में मंदिर नगरों का उदय धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक केंद्रों के रूप में हुआ। इन मंदिर नगरों का विकास तमिल संस्कृति, धार्मिक प्रथाओं और चोल, पाण्ड्य और पल्लवा जैसी राजवंशों द्वारा दिए गए संरक्षण से गहरे रूप से जुड़ा हुआ था।

1. Religious and Cultural Significance

The rise of temple towns in Tamilakam can be traced back to the development of the Dravidian style of architecture, particularly during the period of the Pallavas (6th–9th century) and the Cholas (9th–13th century). These towns were designed around large temples, which were not only places of worship but also centers of learning, arts, and culture. The temples became focal points of social life and the surrounding towns developed in close association with them.

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व: तमिलकम में मंदिर नगरों का उदय द्रविड़ वास्तुकला शैली के विकास से जुड़ा है, विशेष रूप से पल्लवा (6वीं-9वीं शताब्दी) और चोल (9वीं-13वीं शताब्दी) काल के दौरान। ये नगर बड़े मंदिरों के चारों ओर डिज़ाइन किए गए थे, जो केवल पूजा स्थल नहीं थे, बल्कि अध्ययन, कला और संस्कृति के केंद्र भी थे। मंदिर सामाजिक जीवन के प्रमुख केंद्र बन गए और आसपास के नगर उनके साथ घनिष्ठ रूप से विकसित हुए।

2. Political Patronage and Temple Town Development

The rise of temple towns was significantly influenced by royal patronage. The Chola rulers, in particular, played a crucial role in promoting the construction of large temples, many of which became the backbone of temple towns. The most famous example is the Brihadeeswarar Temple in Thanjavur, built by Rajaraja Chola in the 11th century. Such temples were not just places of worship, but also centers of political, economic, and

administrative control. The construction of temples often involved the creation of new settlements and townships, which flourished due to the patronage provided by the kings.

राजनीतिक संरक्षण और मंदिर नगरों का विकास: मंदिर नगरों का उदय राजकीय संरक्षण से गहरे रूप से प्रभावित था। विशेष रूप से चोल शासकों ने बड़े मंदिरों के निर्माण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिनमें से कई मंदिर नगरों की रीढ़ बने। सबसे प्रसिद्ध उदाहरण तंजावुर में स्थित बृहदीश्वर मंदिर है, जिसे 11वीं शताब्दी में राजा राजा चोल ने बनवाया। ऐसे मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं थे, बल्कि राजनीतिक, आर्थिक और प्रशासनिक नियंत्रण के केंद्र भी थे। मंदिरों का निर्माण अक्सर नए बस्तियों और नगरों के निर्माण से जुड़ा होता था, जो राजाओं द्वारा दिए गए संरक्षण के कारण समृद्ध होते थे।

3. Economic Role of Temple Towns

Temple towns played a vital role in the economic life of Tamilakam. The temples became the centers of agricultural and trade activities, as they controlled vast lands and resources. The surrounding towns, which were often built around the temples, became centers of trade, craft, and commerce. The administration of the temple lands was carried out by a network of priests and officials who managed agricultural production and trade. The prosperity of these towns was closely linked to the functioning of the temple as a central institution.

मंदिर नगरों की आर्थिक भूमिका: मंदिर नगरों ने तमिलकम के आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मंदिर कृषि और व्यापारिक गतिविधियों के केंद्र बन गए, क्योंकि वे विशाल भूमि और संसाधनों पर नियंत्रण रखते थे। मंदिरों के चारों ओर जो नगर बसाए गए थे, वे व्यापार, कारीगरी और वाणिज्य के केंद्र बन गए। मंदिरों की ज़मीनों का प्रशासन पुजारियों और अधिकारियों के नेटवर्क द्वारा किया जाता था, जो कृषि उत्पादन और व्यापार का प्रबंधन करते थे। इन नगरों की समृद्धि मंदिर के केंद्रीय संस्थान के रूप में कार्य करने से गहरे रूप से जुड़ी हुई थी।

4. Social and Cultural Life

The temple towns also became important social hubs, where various cultural activities took place. The temples sponsored festivals, dance, music, and art, which were integral to the social fabric of these towns. The annual festivals of the temples attracted large crowds of devotees, pilgrims, and traders, contributing to the economic and cultural vibrancy of the towns. The temples became centers for the propagation of religious and cultural practices, with a significant role played by the local community in maintaining the traditions and rituals.

सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन: मंदिर नगरों ने सामाजिक गतिविधियों के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में भी कार्य किया, जहां विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती थीं। मंदिर त्योहारों, नृत्य, संगीत और कला को प्रोत्साहित करते थे, जो इन नगरों के सामाजिक ताने-बाने का अभिन्न हिस्सा थे। मंदिरों के वार्षिक त्योहारों में बड़ी संख्या में श्रद्धालु, तीर्थयात्री और व्यापारी आते थे, जो नगरों की आर्थिक और सांस्कृतिक जीवंतता में योगदान करते थे। मंदिर धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाओं के प्रचार के केंद्र बन गए, और स्थानीय समुदाय ने परंपराओं और अनुष्ठानों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5. Examples of Temple Towns

Some of the famous temple towns in Tamilakam include **Kanchipuram, Thanjavur, Madurai, and Chidambaram**. Each of these towns was developed around major temples and became integral to the religious, cultural, and political life of the region. Kanchipuram, for example, was known for its temples dedicated to Lord Vishnu and Shiva and was a center for education and culture. Similarly, Madurai's Meenakshi Temple attracted pilgrims from all over India and beyond, and the city became an important administrative center during the Pandya rule.

मंदिर नगरों के उदाहरण: तमिलकम में कुछ प्रसिद्ध मंदिर नगरों में **कांचीपुरम, तंजावुर, मदुरै और चिदंबरम** शामिल हैं। इन नगरों का विकास प्रमुख मंदिरों के चारों ओर हुआ और ये क्षेत्र के धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गए। उदाहरण के लिए, कांचीपुरम भगवान विष्णु और शिव को समर्पित अपने मंदिरों के लिए प्रसिद्ध था और यह शिक्षा और संस्कृति का केंद्र था। इसी तरह, मदुरै का मीनाक्षी मंदिर पूरे भारत और उससे बाहर के तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता था, और यह पाण्ड्य शासन के दौरान एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक केंद्र बन गया था।

Scholarly Minds